AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

# डॉ. एनीबेसेंट का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान

**डॉ. गोपाल सिंह**
सह–आचार्य (राजनीति विज्ञान)
शहीद कैप्टन रिपुदमनसिंह
राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARIES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

डॉ. एनीबेसेंट का भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने होमरूल आंदोलन के समय भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया था। वे एक विदेशी महिला थी, फिर भी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से बहुत प्रभावित थी। उन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि मान लिया था और उसकी सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था। इस प्रकार आईरिश महिला होते हुए उसने भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए। एनीबेसेंट को भारतीय जनता से जितना स्नेह एवं सम्मान मिला, उतना विदेशी भूमि पर बहुत कम व्यक्तियों को मिल पाया है। एनीबेसेंट ने कहा था, ''गुलामी के ऐशो–आराम से स्वतंत्रता की कठोरता अच्छी है। यही होमरूल आंदोलन की भावना है, इसलिए इसे दबाया नहीं जा सकता और न ही कुचला जा सकता है। यह सदाबहार आंदोलन है और नौकरशाही द्वारा किए गए किसी प्रलोभन से इसे अपने जन्म सिद्ध अधिकार को किसी और चीज से

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

बदलने के लिए फुसलाया भी नही जा सकता है।''(1)एनीबेसेंट ने राजनीति में भी उतना ही अधिक भाग लिया, जितना हिन्दू धर्म में पुनरूस्थान आंदोलन में। भारतीय स्वतंत्रता के लिए उनका योगदान वास्तव में महान है। लोकमान्य तिलक, गाँधीजी तथा अन्य भारतीय नेता उनके समकालीन थे।(2)

डॉ. एनीबेसेंट का जन्म 1 अक्टूबर 1847 ई. को लंदन (इग्लैण्ड) में हुआ था। उनकी माता तथा दादी आयरलैण्ड की थी, इसलिए वे अपने को आयरिश महिला कहती थी, उनके पिता विलियम पेज कुड इग्लैण्ड के प्रसिद्ध डॉक्टर थे, किन्तु गणित, विज्ञान एवं दर्शन में उनकी गहरी रूची थी। उनके पिता ने धार्मिक प्रवृत्ति कूट–कूट कर भरी हुई थी। इनकी माता एक आदर्श आयरिश महिला थी। अपने माता–पिता के धार्मिक विचारों का एनीबेसेंट पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा।

एनीबेसेंट जब पांच वर्ष की थी, तब उनके पिता की मृत्यु हो गई। पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक कठिनाई के कारण वे अपनी माता के साथ ''हैरो'' आ गई। यहां एनीबेसेंट ने ''मिस मेरियट'' के संरक्षण में शिक्षा प्राप्त की । उन्होंने लिखा है कि मैंने छोटी–सी आयु में मिस मेरियट के साथ फ्रांस एवं जर्मनी की यात्रा की और उन देशों की भाषाएं सीखी। इसके कारण मेरे मन में स्वतंत्रता की भावना के प्रति विशेष जागृति हुई, जिसके परिणाम स्वरूप मुझे आगे चलकर प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

17 वर्ष की आयु में एनीबेसेंट का विवाह रेव फ्रैंक बेसेंट से हुआ। उनके विचार उनके पति से नही मिलते थे। अतः 1874 ई. में उनका अपने पति से तलाक हो गया। उनका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त दुःखमय रहा। इस समय एनीबेसेंट के मन में ईसाई धर्म के प्रति विभिन्न शंकाए उठ चुकी थी, जिनका उन्हें कोई समाधान नहीं मिल सका था। वस्तुतः अगर एनीबेसेंट में ईसाई धर्म के प्रति अनासी के भाव जागृत नहीं होते, तो वह हिन्दू धर्म के प्रति आसक्त नहीं हो पाती। (3)

एनीबेसेंट ने 1914 में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। उस समय पाश्चात्य शिक्षित भारतीय देश की राजनीति का नेतृत्व कर रहे थे। राष्ट्र की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो गुटों में विभक्त हो चुकी थी। इसी समय क्रांतिकारी तथा आंतकवादी आंदोलन भी प्रारम्भ हो गया था। उन्होंने 1916 में सरकार से स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में भारतीयों को दिये जाने की मांग की। (4)

1916 ई. में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में विशेष महत्व है। इसमें हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित हो गई। गरम दल एवं नरम दल वाले भी एक मंच पर आ गये। एनीबेसेंट ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था, कि भारत के ये दोनों समुदाय अतीत की भांति भारत में भारतीय के रूप में रहेगें। एनीबेसेंट ने हर सम्भव यह प्रयास किया कि उनके द्वारा चलाये जाने वाले होमरूल आंदोलन को कांग्रेस का निश्चित समर्थन प्राप्त हो। होमरूल समर्थकों का खुले अधिवेशन एवं कार्य समिति दोनों में बहुमत होने

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

के कारण एनीबेसेंट को अपने प्रयास में सफलता प्राप्त हुई। 1917 में ऑल इण्डिया मुस्लिम लीग का आंदोलन हुआ, जिसमें एनीबेसेंट को शुक्रिया अदा किया गया। इस सम्मेलन में कहा गया था की ''एनीबेसेंट ने दोनों समुदायों के बीच एकता स्थापित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। होमरूल आंदोलन की शुरूआत तिलक ने की। मार्च, 1916 में तिलक ने पूना में होमरूल लीग की स्थापना की। इसके 6 माह बाद एनीबेसेंट ने भी मद्रास के गोखले हाल में होमरूल लीग की स्थापना की तिलक के सहयोग से एनीबेसेंट ने इस आंदोलन को संचालित करने का निश्चय किया।

जनवरी से जून 1917 तक एनीबेसेंट ने लखनऊ कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव को सफल बनाने के लिए होमरूल के समर्थन में सशक्त प्रचार किया। उन्होंने सम्पूर्ण देश का दौरा किया, सार्वजनिक सभाओं में भाषण दिये और अपने समाचार–पत्रों द्वारा इस विषय में अनेक लेख लिखकर इस आंदोलन का प्रचार किया। इसका जनता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। पुलिस ने अपनी रिपोर्ट में ठीक ही लिखा है, कि होमरूल आंदोलन के नेताओं की प्रचार यात्राएं विषय यात्राओं से कम नहीं है। थियोसोफिकल सोसायटी शाखाएं प्रत्येक प्रान्त और जिले में थी। इससे बनी एनीबेसेंट को बड़ा लाभ हुआ। 1916 में जब उन्होंने आंदोलन प्रारम्भ यिा तो थियोसोफिकल सोसायटी की शाखाएं होमरूल लींग की शाखाएं बन गई। एनीबेसेंट ने अपने दैनिक पत्र ''न्यू इण्डिया एवं साप्ताहिक–पत्र ''कॉमन वील'' से होमरूल का प्रचार किया। उन्होंने सम्पूर्ण देश का दौरा कर जनता को इस आंदोलन के कार्यक्रम तथा उद्देश्य से

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

परिचित करवाया और बड़ी–बड़ी सभाओं को सम्बोधित किया। तिलक ने महाराष्ट्र एवं मध्य प्रान्त में इस आंदोलन का नेतृत्व किया, लेकिन एनीबेसेंट ने देश के शेष भाग मं इस आंदोलन का नेतृत्व किया, लेकिन एनीबेसेंट ने देश के शेष भाग में इस आंदोलन का प्रचार किया। एनीबेसेंट की अपील से प्रभावित होकर स्त्रियों ने भी बड़ी संख्या में आंदोलन में भाग लिया।

माण्टेग्यू– चेम्सफोर्ड घोषणा के कारण होमरूल आंदोलन समाप्त हो गया। यह आंदोलन व्यर्थ नहीं गया। इसका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस

आंदोलन ने सोते हुए भारतीयों को जगाया और उनमें अपूर्व जागृति का संचार किया। इसने राष्ट्रीय आंदोलन को नयी गति प्रदान की और सरकार को नयी सुधार योजना लागू करने के लिए विवश कर दिया। वास्तव में यह प्रथम आंदोलन था, जो राष्ट्रीय स्तर पर चलाया गया था एवं जिसके द्वारा राष्ट्रीय गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया गया था। इसमें कोई संदेव नहीं है कि उनका होमरूल आंदोलन 1921 में गाँधीजी द्वारा लगाये गये असहयोग आंदोलन का पूर्ववर्ती था। गाँधीजी ने होमरूल आंदोलन को अपने आंदोलन का आधार बनाया। दिसम्बर 1918 आते–आते एनीबेसेंट भारतीय राजनीति की मुख्यधारा से अलग–अलग पड़ गई थी। 1919 में अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें एनीबेसेंट की वैधता पर प्रशनचिन्ह लगा दिया गया। 1919 ई. के अधिनियम के बाद एनीबेसेंट ने अंग्रेज

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

सरकार का समर्थन करना प्रारम्भ कर दिया था। यहां तक कि उन्होंने गाँधी जी द्वारा चलाये जा रहे असहयोग आंदोलन का भी विरोध किया। (5)

महात्मा गाँधी के एनीबेसेंट के बारे में क्या विचार थे, उनके विचारों को समझने से ही हम एनीबेसेंट के राजनीतिक विचारों की श्रृखंला को पूरी तरह समझ सकते है। वस्तुतः 1913 से 1919 ई. तक वह भारतीय राजनीतिक जीवन की अग्रणी प्रभावशाली नेताओं में रही। सितम्बर 1916 में उन्होंने होमरूल लीग की स्थापना कर होमरूल आंदोलन आरम्भ कर दिया। इस समय वह भारत के राजनीतिक क्षितिज मं एकदम चरमोत्कर्ष पर जा पहुंची, लेकिन 1919 के आते–आते वह अकेली पड़ गई।

इसका तात्कालिक कारण उनका बाल गंगाधर तिलक से मतभेद था। तिलक के बाद राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी के हाथ में आया। जब गाँधीजी ने अपना सत्याग्रह आंदोलन आरम्भ किया, तो वह भारतीय राजनीति की मुख्य धारा से अलग–सी हो गई। यह बहुत दुःख की बात है कि जिनको किसी समय असाधारण आदर– सम्मान प्राप्त था, उन्हें अब कुछ क्षेत्रों में लोग संदेह की दृष्टि से देखने लगी। इसका प्रमुख कारण यह था कि वह माध्यम वर्ग के लोगों के हितों की प्रच्छन समर्थिका थी। महात्मा गाँधी के राजनीति में आने के बाद एनीबेसेंट भारतीय राजनीति से पृथक हो गई। डॉ. एनीबेसेंट एवं गाँधीजी दोनों ही गम्भीर धार्मिक के व्यक्ति यद्यपि एनीबेसेंट ने भारत को स्वराज दिलवाने का जबरदस्त समर्थन किया था, परन्तु भारतीय राष्ट्रवादियों की दृष्टि में वह हृदय से साम्राज्यवाद की कट्टर समर्थिका थी।

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

गाँधीजी ने जनता में साम्राज्यवाद के विरूद्व चेतना जागृत की अतः जनता ने उन्हें लोकप्रियता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा दिया। एनीबेसेंट ने गाँधीजी के असहयोग आंदोलन की तीर्व भर्त्सना करते हुए विरोध किया। उन्होनें कहा कि यह आंदोलन की तीर्व भर्त्सना करते हुए विरोध किया। उन्होंने कहा कि यह आंदोलन क्रांतिकारी, अराजकतावादी तथा घृणा और हिंसा को उभाडने वाला है। विरोध की बात तो तर्क संगत थी, लेकिन यह बाद खेद– जनक थी। एनीबेसेंट ने गाँधीजी की कटु शब्दों मं आलोचना करते हुए कहा था कि, ''भारत की स्वतंत्रता के मार्ग में, सबसे बड़ी, यद्यपि

अल्पकालिक प्रकार वाली दुर्घटना, महात्मा गाँधी का दर्शन तथा नेतृत्व है। गाँधीजी जिन्हें बहुसंख्यक जनता ''महात्मा'' के नाम से सम्बोधित करती है। वस्तुतः भारत के तानाशाह बन बैठे है। ''अन्त में उन्होंने गाँधी को भारती की प्रगति में ''एक खतरनाक बाधा'' के रूप में निरूपति किया था। (6)

एनीबेसेंट ने गाँधीजी का और उनके असहयोग आंदोलन का विरोध या आलोचना करते हुए यहां तक कह दिया था, कि उन्होंने (एनीबेसेंट) असहयोग आंदोलन की अत्यंत असंयत भाषा में भर्त्सना की और उनको क्रांतिकारी, अराजकतावादी तथा घृणा और हिंसा को उभारने वाला बताया। उन्होनें गाँधीजी का यह कहा कर मखौल उड़ाया कि वे अस्पष्ट, स्वप्न देखने वाले और रहस्यवादी राजनीतिज्ञ है और उनमें यथार्थवाद का अभाव है। उन्हें इस बात में संदेह था कि गांधाजी सच्चे हृदय से पश्चातय, उपवास, तपस्या आदि में विश्वास करते थे।

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

एनीबेसेंट तो पहले से ही दिखाई देता था और यदि असहयोग को एक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर लिया जाए। गाँधीजी का यह कहा सत्य हो सकता है कि जिस सरकार की वे भर्त्सना करते है, उसके लिए मन में घृणा नहीं है, केवल प्रेम का अभाव है, वे सरकार को शक्तिहीन कर दें और फिर भी वे घृणा से मुक्त रहें, किन्तु जो उनके अनुयायी है, उनमें न तो उनकी जैसी सहनशीलता है और न आत्मसंयम।

❖ एनीबेसेंट के मतानुसार गाँधीजी का असहयोग आंदोलन समाज विरोधी शक्ति था। उसका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था के बंधनों को छिन भिन्न करके समाज की नींव को आघात पहुंचाना था। ''असहयोग आंदोलन समाज के बुनियादी पहलुओं पर प्रहार करता ही उसका अस्तित्व कायम रह सकता है। इसकी परिणति अनिवार्यतः दंगा और खतपात में होगी, जिसका एक ही फल हो सकता है, दमन तथा हमारी नागरिक दशा में सुधार की हर योजना का स्थगन।''

इस प्रकार एनीबेसेंट ने गाँधीजी के राजनीतिक दर्शन की कटुआलोचना की। इसका प्रमुख कारण यह था कि उन्होंने गाँधीजी के भारतीय राजनीति में आगमन को अपने व्यक्तिगत के उत्कर्ष के लिए एक खतरा समझ लिया था। यही बात हमें बहुत कुछ अर्थो में सत्य प्रतीत होती है। यह भी सम्भव है कि वह यह चाहती हो कि वही एकमात्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नेता बनी रहें। गाँधीजी ने जब भारतीय राजनीति में प्रवेश किया, इसके बाद एनीबेसेंट प्रथम पंक्ति के नेताओं से हटकर

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

दूसरी श्रेणी में आ गयी। इसके बाद उन्होंने गाँधीजी को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानकर उनके विचारों की आलोचना प्रारम्भ कर दी। जो भी हो, हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि दोनों में मतभेद था, तथापि राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा स्वतंत्रता के लिए दोनों ने अथक प्रयास किये। इस प्रकार दोनों ने राष्ट्र की सेवा के लिए महत्वपूण्र योगदान किया। (7)

जब गाँधीजी शांतिपूर्वक आंदोलन का रास्ता अपना रहे थे। जब नरम दल की नेता एनीबेसेंट ने गाँधीजी को ''राजनीतिक बच्चा'' कहकर उनके कार्यक्रम का मजाक उड़ाया। (8)

एनीबेसेंट ने 1961 ई. सरकार से स्वराज्य को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में भारतीयों को दिये जाने की मांग की थी। इसने गाँधीजी का और उनके असहयोग आंदोलन का विरोध किया और उसके विरूद्व तीन आरोप लगाए। यद्यपि एनीबेसेंट एक विदेशी महिला थी, तथापि ह्रदय से पूर्णतः भारतीय थी। उन्होंने भारत को अपनी मातृभूमि मानकर अपना सम्पूर्ण जीवन उसकी सेवा समर्पित कर दिया था। जिसके भारत सदैव उसका कृतज्ञ रहेगा।

---

संदर्भः–

1. नागोरी एस.एल. एवं नागोरी कांताः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान, जयपुर, 1997 पृष्ठ सं. 113
2. एनीबेसेंट एवं भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, जयपुर पृष्ठ सं. 4
3. एनीबेसेंट एवं भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, जयपुर पृष्ठ सं. 9

ISSN: 2321-3914
Volume: 2 Issue: 1
April 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

4. नागोरी एस.एल. एवं नागोरी कांताः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान, जयपुर, 1997 पृष्ठ सं. 126–127
5. नागोरी एस.एल. एवं नागोरी कांताः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान, जयपुर, 1997 पृष्ठ सं. 136–141
6. एनीबेसेंट रूपीचेज एण्ड राइटिंग्स पृष्ठ सं. 14
7. नागोरी एस.एल. एवं नागोरी कांताः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान, जयपुर, 1997 पृष्ठ सं. 142–145
8. अयोध्या सिंह, भारत का मुक्ति संग्राम नई दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास समस्त विश्वविद्यालय के सहयोग कम्पनियां, 1971 पृष्ठ सं. 404–405

*****